तुलसी प्रज्ञा २००२ १० (फोल्डर नं. ०२४५४२)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

धर्म और शास्त्र

अनुक्रमणिका

महाप्रज्ञ दर्शन' में दृष्टि – परिवर्तन – प्रोफेसर दयानन्द भार्गव ----------३

विधुत – सचित या अचित ? – आचार्य महाप्रज्ञ ---------- १५

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का सामाजिक सरोकार – प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन ---------- २९

उत्तराध्ययन में प्रतीक – समणी अमितप्रज्ञा ---------- ३९

कर्मबंध की प्रक्रिया – साध्वी श्रुतयशा ---------- ५३

नाम कर्म और शरीर रचना विज्ञान – साध्वी आरोग्यश्री ---------- ६३

प्राकृत ग्रंथो में कर्मसिद्धान्त का विश्लेषण – डॉ. रमेशचन्द्र जैन ---------- ६९

जैन दर्शन में गुणस्थान – मुनि मदनकुमार ----------८१

जैन साहित्य और दर्शन की प्रासंगिक्ता – डॉ. मनमोहन स्वरुप माथुर ---------- ८४

ज्योतिष – विधा को जैनाचार्यो का अवदान – मनोज कुमार श्रीमाल ---------- ९२

Acaranga – Bhasyam – Acarya Mahaprajna ---------- 99

The Stage of Development of the Prakrit of Bhasas Dramas and his age – V. Lesny ------ 115

Concept of Nisreyas in Jain Philosophy – Muni Mahendra Kumar ---------- 122

Implications of the Concept of Mode – Dr. Samani Chaitnya Prajna---------- 125

Yogic Exercises And Meditation Improve Sleep Quality and Mental Health - Dr. J.P.N. Mishra ---------- 131

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org